"निंदक सतिगुर पूरे का"

- जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ।
नरक घोर दुख खूह है ओथै पकड़ि ओह ढोइआ ।

अर्थः- जो मनुष्य पूरे सतिगुरु की निंदा करता है, वह संसार में भाव, सारी उम्र दुखी रहता है । दुखों का कूआँ रूप जो घोर नर्क है, उस निंदक को पकड़ के उस कूँए में डाला जाता है ।

कूक पुकार को न सुणे ओह अउखा होइ होइ रोइआ ।
ओनि हलत पलत सभ गवाइआ लाहा मूल सभ खोइआ । ओह तेली सदा बलद करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ।

अर्थः- जहाँ उसकी चीख - पुकार की ओर कोई ध्यान नहीं करता, और वह ज्यों - ज्यों दुखी होता है, त्यों - त्यों ज्यादा रोता है । लोक और परलोक, भजन रूपी लाभ और मानव – जनम रूपी मूल ये सब कुछ निंदक ने गवा लिए होते हैं । तेली का बैल बना के नित्य नए सूरज के साथ वह प्रभु के हुक्म में जोया जाता है भाव, जैसे तेली का बैल हर रोज सवेरे कोल्हू के आगे जुतता है, वैसे ही वह निंदक नित्य निंदा के चक्कर में पड़ कर दुख सहता है ।

हरि वेखै सुणै नित सभ किछ तिदू किछ गुझा न होइआ ।
जैसा बीजै सो लुणै जेहा पुरबि किनै बोइआ ।

अर्थः- हरि सदा ये सब कुछ देखता सुनता है उससे कोई बात छुपी नहीं रह सकती । यह प्रभु के हुक्म में ही है कि जैसा बीज किसी जीव ने शुरू से बीजा है और जैसा अब बीज रहा है, वैसा फल वह खाता है ।

• होदै परतखि गुरु जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ।
कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुह पाही ।
जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भंभल भूसे खाही ।

अर्थः- सतिगुरु के प्रत्यक्ष होते हुए भी जो निंदक गुरु से विछुड़े रहते हैं, उन्हें दरगाह में आसरा नहीं मिलता । यदि कोई उनका संग भी करता है उसका भी मुँह फीका और मुँह पर निरी थूक पड़ती है भाव, लोग मुँह पर धिक्कारते हैं क्योंकि जो मनुष्य गुरु से विछुड़े हुए हैं, वह संसार में भी तिरस्कारे हुए हैं और सदा भंभलभूसे में डाँवा - डोल रहते हैं ।

जिन गुर गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही । तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही । ओना दा आखिआ को ना सुणै नित हउले हउलि मराही ।

अर्थः- जो मनुष्य प्यारे सतिगुरु की निंदा करते हैं, वह सदा जैसे ढाहें मारते फिरते हैं । उनकी तृष्णा कभी नहीं उतरती और सदा भूख - भूख करते कूकते हैं, कोई उनकी बात का एतबार नहीं करता इस कारण वह सदा चिन्ता फिक्र में ही खपते हैं ।

सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही । जो सतिगुर मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पत गवाही । ओई अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओस मिलै तिस कुसट उठाही ।

अर्थः- जो मनुष्य सतिगुरु की महिमा बर्दाश्त नहीं कर सकते, उनको लोक - परलोक में ठिकाना नहीं मिलता । गुरु से जो विछुड़े हैं, उनसे मनुष्य जा मिलते हैं, वे भी अपनी छोटी - मोटी इज्जत गवा लेते हैं क्योंकि गुरु से टूटे हुए वे पहले ही कोढ़ी हैं, जो कोई ऐसे मनुष्य का संग करता है उसे भी कोढ़ चिपका देते हैं ।

हरि तिन का दरसन ना करहु जो दूजै भाई चित लाही । धुरि करते आपि लिखि पाइआ तिस नालि किहु चारा नाही ।

अर्थः- हे सिखो ! वास्ता है ईश्वर का, उनके दर्शन भी ना करो जो सतिगुरु को छोड़ के माया के प्यार में चित्त जोड़ते हैं, उनके साथ भाव, उन्हें सुधारने के लिए कोई उपाय कारगर नहीं हो सकता, क्योंकि, करतार ने आरम्भ से ही उनके किए कर्मों के अनुसार ऐसे दूसरे भाव के संस्कार ही उनके मन में लिख के डाल दिए हैं ।

जन नानक नाम अराधि तू तिस अपड़ि को न सकाही । नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ।

अर्थः- हे दास नानक ! तू नाम जप, नाम जपने वाले की बराबरी कोई नहीं कर सकता नाम की महिमा बहुत बड़ी है, दिनो - दिन बढ़ती जाती है ।

जिस कृिपा करे प्रभ आपणी तिस सतिगुर के चरण धोइआ । गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ । जन नानक नाम धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुख होइआ ।

(4-305-309)

अर्थः- जिस मनुष्य पर प्रभु अपनी मेहर करे, वह सतिगुर के चरण धोता है । जैसे लोहा काठ के संग तैरता है वैसे ही सतिगुर के बताए मार्ग पर चल के संसार सागर से तैर जाता है । इस वास्ते हे दास नानक ! तू नाम जप क्योंकि प्रभु का नाम जपने से सुख मिलता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"